हमारी बात

बदलते समय के साथ पुराने विश्वास टूट रहे हैं और पुरानी मान्यताएं बदल रही हैं। मसलन, औरतों के खाने-पहनने, उनकी स्वास्थ्य रक्षा, पढ़ाई-लिखाई और परिवार की सीमा बांधने के बारे में विचारों में भारी बदलाव आया है। जहां समुचित बदलाव नहीं हुआ है वहां इन मुद्दों पर नई चेतना जागी है। सरकार और समाज दोनों पर भारी दबाव पड़ा है कि औरतों को मर्दों की बराबरी का व्यवहार मिलना चाहिए।

"औरत मर्द के पैर की जूती है," यह मिथक अब किसी के गले नहीं उतरता, हालांकि औरतों को घर में और घर के बाहर पूरी इज्जत और सुरक्षा मिलने में अनेक रुकावटें हैं। जैसे औरतों में शिक्षा और आत्मविश्वास की कमी। पढ़ाई से आत्मविश्वास पैदा होता है और आत्मविश्वास से पढ़ाई की ओर रुझान बढ़ता है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

"औरत मर्द की मुंहताका है और रहेगी; वह कमज़ोर है, उसे रक्षक की जरूरत है," ऐसी झूठी धारणाएं सरासर गलत साबित हो रही हैं। बहुत औरतें पढ़-लिखकर आत्मनिर्भर बन सुखी जीवन जी रही हैं, जो घुट-घुट कर जीने से कहीं अच्छा है।

शारीरिक नज़रिये से औरत पुरुष के मुकाबले अवश्य कमज़ोर है, पर सफल जीवन के लिए जरूरी अनेक गुणों में वह अधिक संपन्न है। वह अधिक धैर्यवान और सहनशील है। पुरुष मुसीबतों के झंझावात में फंस कर जल्दी टूट जाता है, हृदय रोगी बन जाता है, जबकि बहुधा औरत कष्टों के बीच रह कर भी अपना संतुलन नहीं खोती।

औरतों के साथ मारपीट व बलात्कार की कुत्सित घटनाएं आज भी घट रही हैं, पर उनके प्रतिकार की भावना भी तेजी पकड़ती जा रही है। क़ानून बदले हैं जिससे प्रोत्साहन पाकर औरतें चुपचाप जुल्म और बेइंसाफी सह लेने के बजाय अब अदालत का दरवाजा खटखटाने लगी हैं।

मानव समाज में बुनियादी बदलाव आने में समय लगता है, इसलिए बहनें हिम्मत न हारें और समाज की झूठी मान्यताओं को बदलने के लिए कोशिश करती रहें। निहित स्वार्थ रास्ते में रोड़े बनते हैं, औरतों पर लांछन लगाते हैं और उनका मनोबल तोड़ने की कोशिश करते हैं। पर औरतें अपनी मर्यादा की सीमा में रह कर समाज से अपनी बात मनवाने पर ज़ोर डालती रहें। क़ानून एक झटके में बदल जाता है, पर समाज को बदलने में समय लगता है। औरतों को आशावान, धैर्यशील और कर्मठ बने रहना चाहिए। बहुत कुछ बदल चुका है, बाकी भी बदलेगा। गलत धारणाएं या मान्यताएं आनन-फानन में नहीं टूटतीं। औरतें धीरज, होशियारी और मर्दों के सहयोग से सड़ी-गली व्यवस्था को बदलने की कोशिश करती रहें। एक दिन उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

ज्ञानेंद्र जैन